मेघालय में शिक्षक-शिक्षा का विकास

बाशान डी.एम. डींगडोह

शिक्षकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए राज्य में शिक्षक-शिक्षा संस्थानों को क्रमिक रूप से स्थापित किया गया। प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए थियोलॉजिकल कॉलेज के तहत, पहला शिक्षक-शिक्षा संस्थान चेरापूँजी के वेल्श मिशन द्वारा शुरू किया गया था। 1861 में सरकार ने चेरापूँजी नॉर्मल स्कूल के प्रशिक्षण स्कूल खण्ड को नाँगसॉलिया से शिलांग के साथ मिलाने और मखहर शिलांग में वेल्श मिशन हाई स्कूल से सम्बद्ध करने का फैसला किया। 1946 तक प्रशिक्षण स्कूल ने उसी इमारत में काम किया। स्वतंत्रता के बाद 1947 में तत्कालीन भारत सरकार ने वेल्श मिशन से अनुरोध किया कि वे प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों को प्रशिक्षण दें। बाद में प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्रबन्धन के तहत इसे चेरा शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में जाना जाने लगा।

बीटीसी की स्थापना से काफ़ी पहले 1906 में सरकार ने तुरा में 30 प्रशिक्षुओं की क्षमता वाला गुरु ट्रेनिंग स्कूल (जीटीएस) शुरू किया था। यह गारो हिल्स में प्राथमिक शिक्षकों की प्रशिक्षण सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करता था, किन्तु 9 दशकों के अस्तित्व के बाद प्रशासनिक समस्या के चलते कुछ साल पहले यह बन्द हो गया।

सेंट एडमंड्स कॉलेज, शिलांग से प्राप्त मौखिक जानकारी के अनुसार, 1934 में स्थापित सेंट एडमंड्स बीटी कॉलेज, शिलांग 1942 में बन्द कर दिया गया।

जब महिलाओं के लिए बीटी कॉलेज की सख़्त ज़रूरत महसूस की गई और इसके लिए अनुरोध किया गया तो 1937 में सेंट मैरीज़ बीटी कॉलेज की स्थापना की गई जो अब सेंट मैरीज़ कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन कहलाता है। 1938 में यह कलकत्ता विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था, फिर 1948 में गौहाटी विश्वविद्यालय से और उसके बाद 1973 में शिलांग के नॉर्थ-ईस्टर्न हिल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हुआ। 1998 तक इस कॉलेज में डिग्री कॉलेज के शिक्षकों की मदद से अंशकालिक पाठ्यक्रम आयोजित किए जाते थे। उत्तर-पूर्वी राज्यों में महिलाओं के लिए यह पहला बीटी कॉलेज था जो पिछले 60 वर्षों से माध्यमिक स्तर पर शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में महती सेवा प्रदान कर रहा है। इसे बीएड के सर्वश्रेष्ठ कॉलेजों में से एक माना जाता है। राष्ट्रीय शिक्षक-शिक्षण परिषद के मानदण्डों (एनसीटीई अधिनियम 1993 के तहत) के क्रियान्वयन के बाद से यह कॉलेज, एक पूर्ण विकसित शिक्षक-शिक्षा कॉलेज के रूप में काम कर रहा है जिसमें एक वर्षीय बीएड कोर्स चलाया जाता है और इसे 100 छात्र-शिक्षकों को शिक्षा देने की अनुमति प्राप्त है।

1940 में इंग्लैंड की एक शिक्षाविद और सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री मार्गरेट बर्र द्वारा महात्मा गाँधी द्वारा प्रचारित बेसिक शिक्षा या बुनियादी तालीम के तहत पहली बार बेसिक ट्रेनिंग सर्टिफिकेट (बीटीसी) की स्थापना की गई। इसके बाद में बीटीसी की स्थापना पश्चिम गारो हिल्स ज़िले के रोंगखों में 1955 में, 1967 में जेंटिया हिल्स ज़िले के थैडलास्केन में और 1974 में पूर्वी गारो हिल्स के रेसबेलपारा में हुई।

पोस्ट-ग्रेजुएट ट्रेनिंग कॉलेज, शिलांग, अब कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन (पीजीटी), शिलांग की स्थापना 1964 में माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाने वाले स्नातक शिक्षकों को डिग्री स्तर का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए की गई थी। प्रारम्भ में यहाँ शिक्षकों की प्रशिक्षण सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक वर्ष की अवधि का पूर्णकालिक और अंशकालिक पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। दोनों कार्यक्रमों में कॉलेज की प्रवेश क्षमता करीब 300 विद्यार्थी प्रति वर्ष थी। राष्ट्रीय शिक्षक-शिक्षण परिषद के मानदण्डों (एनसीटीई अधिनियम 1993 के तहत) के क्रियान्वयन के बाद से यह कॉलेज अब पूर्ण विकसित शिक्षक-शिक्षा कॉलेज के रूप में काम कर रहा है और एक वर्ष का बीएड कार्यक्रम चला रहा है जिसे 100 छात्र-शिक्षकों को शिक्षा देने की स्वीकृति प्राप्त है।

सेवाकालीन शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा माध्यमिक या उच्च-प्राथमिक स्तर के लिए दो नॉर्मल प्रशिक्षण स्कूल स्थापित किए गए – एक चेरापूँजी, ईस्ट खासी हिल्स में और दूसरा तुरा, वेस्ट गारो हिल्स में।

कियांग नांगबाह बीटी कॉलेज की स्थापना वर्ष 1981 में जोवई में की गई ताकि ज़िले के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा सके। परन्तु एनसीटीई मानदण्डों की

शुरुआत के बाद मानदण्डों का अनुपालन न कर पाने के कारण कॉलेज बन्द हो गया।

राज्य के गारो हिल्स के तीन ज़िलों के शिक्षकों की माध्यमिक स्तर की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए 1993 में वेस्ट गारो हिल्स में गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन, तुरा की स्थापना हुई। वर्तमान में यह कॉलेज एक वर्ष का बीएड कार्यक्रम चला रहा है जिसमें 100 छात्र-शिक्षकों को शिक्षा देने की अनुमति प्राप्त है।

डॉन बोस्को इंस्टीट्यूशन का डॉन बोस्को कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन, तुरा 2005 में स्थापित किया गया जहाँ एनसीटीई से मान्यता और अनुमति के साथ एक वर्ष का बीएड कार्यक्रम शुरू हुआ और यहाँ वर्ष में 100 छात्र-शिक्षकों को प्रवेश दिया जाता है।

इसके अलावा यहाँ निजी ग़ैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा संस्थान भी थे जैसे सेंट मैरीज़ मैज़ारेलो, जेंटिया हिल्स, जो 1962 में शुरू हुआ और 1977 में लुम जिंगशाई प्रशिक्षण केन्द्र, मारबिशु, ईस्ट खासी हिल्स शुरू हुआ। इन संस्थानों ने राज्य में प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कार्य किया। लेकिन एनसीटीई मानदण्डों के क्रियान्वयन के बाद इन दो संस्थानों ने क्रमशः 1996 और 2000 में काम करना बन्द कर दिया क्योंकि एनसीटीई ने इन्हें मान्यता नहीं दी।

2000 में एनपीई (1986) द्वारा संकल्पित ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) को शुरुआत में राज्य के तीन ज़िलों में स्थापित किया गया था। यह थैडलास्केन, जेंटिया हिल्स, चेरापूँजी, ईस्ट खासी हिल्स और रेसबेलपारा, ईस्ट गारो हिल्स में स्थित हैं। बाद में अन्य चार डाइट भी स्थापित किए गए जो अकादमिक वर्ष 2005-06 से काम करने लगे हैं और ये वेस्ट खासी हिल्स ज़िलों में सैडेन, री-भोई, बाघमारा, दक्षिण गारो हिल्स, तुरा, वेस्ट गारो हिल्स और नोंगस्टोइन में स्थित हैं। डाइट का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करना और वयस्क और ग़ैर-औपचारिक कर्मियों को वयस्क और ग़ैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के उचित संचालन के लिए प्रशिक्षित करना था।

डॉ. बाशान डी.एम. डींगडोह DERT, शिलांग के वरिष्ठ संकाय सदस्य हैं। उन्हें शिक्षक-शिक्षा और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने का 15 से भी अधिक वर्षों का अनुभव है। इस दौरान वे केन्द्र द्वारा प्रायोजित शिक्षक-शिक्षा, शोध गतिविधियों, शिक्षकों व अध्यापक-शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, योजना और प्रशासन जैसी योजनाओं में कार्य करते रहे हैं। वर्तमान में वे राज्य के कुछ स्कूलों की केस स्टडीज़ एवं स्कूल सुधार योजना की अवधारणा के माध्यम से राज्य में कमज़ोर शैक्षिक प्रदर्शन वाले स्कूलों को कैसे सुधारा जा सकता है, इस पर काम कर रहे हैं। उनसे *bashandesmond@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल